दैनिक
युगपक्ष
एक अखबार सारा संसार
• संस्थापक:यशस्वी पत्रकार स्व.वीरेन्द्रकुमार जी सक्सेना • मार्गदर्शक:स्व.डॉ.राकेश जी सक्सेना

बादल का परिचय

आकाश शाश्वत है
मैं बादल क्षणभंगुर हूँ,
इंसान के जीवन की तरह
मैं भी तो एक नश्वर हूँ।

बादल हूँ आकाश नहीं
सँगी मेरा कोई नही,
सूरज की किरणों में छुपा
मैं जल हूँ, छाया नहीं।

माँ धरती की निर्मल नमी से
आकार मैं अपना पाता हूँ,
उमड़ घुमड़ कर बरस बरस कर
धरती पर वापस आता हूँ,

आकाश कहो या गगन कहो
ना मिटा पायेगा,उसे कोई
किरणों से बने इस बादल का
ना बचाएगा अस्तित्व कोई।

हवा से मेरा रिश्ता है
गले लगाकर चलती है,
चलते चलते वो कभी कभी
थककर रुक भी जाती है।

आता हूँ और जाता हूँ
सँग नीर का अमृत लाता हूँ,
बरस बरस कर उर्मी पर
खुशियाँ बिखेर कर जाता हूँ।

कुछ बनना है तो बादल बनो
काम किसी के आओगे,
बिजली कड़काकर मीठे जल से
हरियाली जीवन में लाओगे।

न्यायाधिपति गोपालकृष्ण व्यास
अध्यक्ष
मानवाधिकार आयोग, राजस्थान